रविवार, दिनाँक 22-10-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

आत्मपद दा रस्ता बता रहे ने, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।

मोह माया दी नींद विच घूक सोये, महाबीर जी आके जगा रहे ने।

भैणां पाप न करो धर्म मार्ग चलो, बली ए उपदेश सुना रहे ने।।

शास्त्र महाबीर दा रस्ता बताया ए, बली सांवले चरण दिखा रहे ने।

सांवले चरणां दे मालिक महाबीर जी, दर्शन सारियाँ भैणां नू करा रहे ने।।

किसे नू युक्ति देवन किसे नू उपदेश देवन, सिया राम लषण नू मिला रहे ने।

दिन चाह विच गुजरे रातीं नींद आवे, ओ शान्ति उपदेश सुना रहे ने।।

जेहड़ी भैण महाबीर जी दा नाम ध्यावे, ओहनू मुक्ति दी पदवी दिवा रहे ने।

कलयुग ने है सब नू घबराया, महाबीर कलयुग नू आप हटा रहे ने।।

अग्गे सेवकां नू महाबीर जी भेजदे रहे, हुण चरणां दे मालिक आप आ गये ने।

सदके जावां सदके जावां महाबीर जी तों, जेहड़े सब दियां आशा पुजा रहे ने।।।

दासी चरणां तों बलिहार जावे, सानू भुलियां नू रस्ते ला रहे ने।

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

सजनों इस भजन को ध्यानपूर्वक सुनने पर आपको समझ आया होगा कि परोपकार प्रवृत्ति श्री साजन जी कलियुग में पैदा हुए हर मानव को जागृति में लाने हेतु, जीवन का जो वास्तविक लक्ष्य है, आत्मपद की प्राप्ति, उसके बारे में परिचित कराते हुए यानि आत्म-स्मृति में लाते हुए यह शुभ सन्देश दे रहे हैं कि हे कलुकालवासियों ! मोह-माया के बन्धन से आज़ाद हो जाओ। जानो आत्म-नियन्त्रण द्वारा ऐसा करने पर आप सकाम कर्म करने से

बच जाओगे। कहने का आशय यह है कि इस तरह जो विकारवृत्तियाँ मन में घर कर चुकी हैं और जीवन के लक्ष्य से दूर ले जा रही हैं व दुःख प्राप्ति का कारण हैं, उनमें फँसने से भी बच जाओगे। ऐसा ही हो इसीलिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ द्वारा सच्चेपातशाह जी सबको आवाहन देते हुए कह रहे हैं कि हे इन्सानों, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के उपदेश अनुसार भाव-स्वभाव परिवर्तन कर सद्-विचारों को धारण करो। फिर तद्नुरूप सकारात्मक परिवर्तन लाने के प्रति अपने आप को मजबूर करो ताकि मोह-माया के प्रभाव से आपके मन-मस्तिष्क में जो अशान्ति छा गई है और जिसके कारण हर वक्त सोचों में डूबे रहते हो, उससे आज़ाद होकर निर्भय हो जाओ। इस तरह जगत से निर्लिप्त रहते हुए सार्थक जीवन जीने के प्रति सुचेत हो जाओ ताकि आप आत्मपद प्राप्त कर अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त कर सको। इस सन्दर्भ में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की महिमा गाते हुए वह कहते हैं कि उन द्वारा बख़्शा आत्मज्ञान धारण करो। इस हेतु अब तक जो इस संसार से अज्ञान प्राप्त किया हुआ है, सर्वप्रथम उसको त्याग दो यानि जड़ से काट दो। फिर सत्यज्ञान धारणकर सत्यार्थ बन जाओ व धर्मपरायणता से जीवन जीना आरम्भ कर दो। जानो यह प्राप्ति आपको सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अलावा कहीं से भी प्राप्त नहीं हो सकती। अतः इस बात को भली भान्ति समझ लो। याद रखो यदि ऐसा कमाल कर दिखाया तो आपके मन-मस्तिष्क में शान्ति का वातावरण पनपेगा ही पनपेगा क्योंकि तब अज्ञान का बादल छँट जाएगा और सूरजों के सूरज का प्रकाश आपके हृदय में छा जाएगा। इस तरह आपके लिए अपने 'ख़्याल को ध्यान वल, व ध्यान को प्रकाश वल जोड़कर आत्म-स्वरूप में स्थित करना सहज हो जाएगा और हाथों-हाथ आपको अच्छा परिणाम प्राप्त हो जाएगा। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हिम्मत करके अपने अन्दर ऐसी व्यवस्था कायम कर लो अन्यथा अज्ञान अन्धकार में ख़्याल को कुछ नज़र नहीं आएगा। जब नज़र ही नहीं आएगा तो नाम-अक्षर चलाने में दिलचस्पी कैसे पैदा होगी? परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ने की उमंग हृदय में कैसे उत्पन्न होगी? जब हृदय में उमंग ही पैदा नहीं होगी तो हम अपनी जीवन नैया भवसागर में डुबो बैठेंगे। ऐसा होने पर हमारे साथ हमसे जुड़े परिवार व समाज को भी नुक्सान हो जाएगा और हम बहुत बड़ा ग़ुनाह कर बैठेंगे। यहाँ सजनों याद रखो कि मानव रूप में हम ग़ुनाह करने के लिए पैदा नहीं हुए अपितु हम तो जगत का उद्धार करने के लिए पैदा हुए हैं और यही हमारा परम कर्त्तव्य है। यह कर्त्तव्य कुदरत ने हमें बख़्शा है अतः इसके प्रति हर क्षण सतर्क रहना यानि हर हाल में इसे पूरे दिल से सम्पन्न करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इसी तथ्य के दृष्टिगत यह माना जाता है कि आत्मपद की प्राप्ति करना जीवन के हर कार्य से अधिक प्राथमिकता माँगता है। इसकी सिद्धि हेतु

सपरिवार सत्संग में निरन्तर आना आनिवार्य है। अतः अपने बच्चों को सत्संग में लाया करो और अपने पास बिठाया करो अन्यथा वे आपके मार्ग की बाधा बन जाएँगे। आप चाहोगे तो भी वे आपको नहीं चलने देंगे। ऐसा न हो इस हेतु संकल्प लो कि हम परिवारजनों व सामाजिकजनो को भी सत्संग में लायेंगे ताकि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों को हम आत्मसात कर सकें। जानो ऐसा करने से यानि वचनों की पालना करने से आपके अन्दर से कलुकाल का वातावरण छँट जाएगा और सतवस्तु छा जाएगी। सतवस्तु छा गई तो चित्त में प्रसन्नता का वातावरण बन जाएगा। चित्त प्रसन्न तो प्रभु संग। प्रभु संग तो हम सबसे अक्लमन्द। जब सबसे अक्लमन्द हो गए तो हम कुल दुनियाँ को जागृति में लाकर परोपकार कमा सकते हैं। जानो ऐसा काबिल इन्सान बनने के लिए हमारे पास साधन रूप में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ है। इस साधन का भरपूर प्रयोग करो यानि केवल बाहर से ही शीश मत झुकाते रहो अपितु अन्दर से भी अपना आपा अर्पण कर दो। कहने का मतलब यह है कि सद्‌बुद्धि में आ जाओ और अपने, अपने परिवार व समाज के सजन बनने में विलम्ब मत करो क्योंकि समय के अनुरूप सब कुछ कर लेना ही उचित होता है।

सजनों आप व आपके बच्चे ऐसा करने में समर्थ हों इसलिए एक दिन हम आप सबको अपने युवा बच्चों सहित वसुन्धरा बुलाने वाले हैं। सो आपने अपने बच्चों को साथ लाने की हिम्मत दिखानी है। उसके लिए अभी से उनको इसके प्रति तैयार करते जाओ ताकि वे सहर्ष ऐसा करना स्वीकार लें। इसके लिए हम आपको कुछ समय दे रहे हैं। अगर इसमें भी आप हार खा गये तो उपचार नहीं हो सकेगा। तब आप कलुकाल के धोखे में आकर हर तरफ से हार खा जाओगे और दग्ध-भस्म में चले जाओगे। क्या आप जानते हो कि दग्ध भस्म का समय कितना लम्बा होता है? तो जानो कि वह तीन युगों के बराबर होता है। त्रेता, द्वापर व कलुकाल का जितना समयकाल होता है, उतने समयकाल का सतयुग होता है। इतने लम्बे समय तक दग्ध भस्म रहना पड़ता है। अगर उस दुःख से बचना चाहते हो और अपनों को बचाना चाहते हो तो फिर जो इस भजन में सुना है तद्‌नुसार सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचन पालन करने से मत सकुचाओ। यह सीधी और स्पष्ट बात है। इस बात को समझते हुए अपने व सबके सजन बन जाओ। इसके विपरीत यदि अपने व अपनों के वैरी बनना चाहते हो और अपने समेत सबको आत्मिकज्ञान से वंचित रखना चाहते हो ताकि कुकर्म अधर्म करते हुए शारीरिक साज-सज्जा का सामान एकत्रित करते रहो तो फिर उसी में प्रसन्न रहो। जानो सजनों यह महल-माड़ियाँ, शरीर, घर-बार, ऐश-ओ-

आराम सब क्षण-भंगुर शान का प्रतीक हैं। आत्मिक शान तो महान होती है, उसके तुल्य कुछ नहीं होता। जो उस शान को प्राप्त हो जाता है वह स्वतः ही निष्कामी हो जाता है यानि उसकी संसार से कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा शून्य हो जाती है। इस तरह वह अमीरों का अमीर हो दाता बन जाता है। अब अपने आप को देखो - फ़कीरी में जीवन जी रहे हो। आप अपने साथ ऐसा क्यों कर रहे हो? आप अपने दाता-दातार यथार्थ परमात्म स्वरूप को पहचानो और उसका दर्शन करो। जब उस एक संग प्रीत का अनुभव होता है तो परमानन्द छा जाता है क्योंकि तब मन हर्षित और बुद्धि सुचेत हो जाती है। इस तरह आप पूर्णतः आत्म-स्मृति में आ जाते हो। ऐसे आत्मस्मृत इन्सान को फिर कोई छल नही सकता, कोई उसे ठग नहीं सकता और न ही कोई उसे भरमा व बहका सकता। यह होती है मानव की वास्तवविक शान। जो इस शान को प्राप्त हो जाता है, हक़ीकत में वही युग-पुरुषों की भान्ति सम्मानित होता है। बाकी तो सब मतलब के यार होते हैं। इस बात को समझते हुए सजनों समझदार बनो और जिस दिन हम आपके बच्चों को बुलाएँ तो उन्हें यहाँ अवश्य लेकर आना। इस हेतु अभी से तैयारी करो और समझो कि यह तैयारी फ़र्स्ट का नतीजा प्राप्त करने की तैयारी है क्योंकि उस आयोजन के दौरान होने वाली बातचीत से आपके समेत सबको फायदा पहुँचेगा यानि वह सर्व हितकारी बात होगी। इस तरह सबका बचाव हो जाएगा और सब अफुर अवस्था में आ नाम-ध्यान में जुड़ने में सक्षम हो जाएँगे व आत्मपद प्राप्तकर अपना जीवन सफल बना लेंगे। सो आज मीटिंग के दिन जो फैसला लिया है उसको भूलना नहीं क्योंकि यदि उसको अनसुना कर दिया

तो जो भोग भोगना पड़ेगा उसके बारे में हम कुछ नहीं कह सकते। फिर जब तड़पोगे तो आपको आज के दिन की बात याद आएगी और लगेगा कि मेरी मति क्यों मारी गई? क्यों मैंने समय पर कुदरत का पैग़ाम नहीं सुना? इस धिक्कार का आपको सामना न करना पड़े इसलिए परमेश्वर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहते हैः-

भेजया हाई तैनू सच वणजन नू, झूठ दा कीता हेई व्यापार।

डरदा होया मेरे निकट न आवे, भुलिया फिरें गंवार।

ए जिन्दगी तेरी सदा नहीं रहनी, इस नू लवीं संवार।

जन्म दी मौज न माणी, जन्म दी मौज न माणी।।

याद रखो परमात्मा की आवाज को अनसुना करना सदैव घातक होता है। ऐसे व्यक्ति का नाम अक्षर ठीक चल ही नहीं सकता अतः ऐसा अपने साथ मत होने देना। अब आगे सुनोः-

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

शाखः-

हम श्री राम नाम दे व्यापारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।

राम नाम कुल नगरी ओ सारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।।

जगमग जगमग जगमग जगमग, ओ - ओ - ओ - ओ - ओ।

हम श्री राम नाम दे व्यापारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।।

श्री राम रटन तुसां कर लवो, राम नाम दा खज़ाना भर लवो ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

राम नाम जगत हितकारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।।

श्री राम नाम दा घाटा न पाईं, श्री राम नाम दा नफा कमाईं ओ ओ

ओ ओ ओ ओ।

श्री राम जगत भण्डारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।।

श्री राम नाम नूं इक रस हो ध्याइयो, श्री राम नाम नाल मेल तुसां खाइयो।

एहो पदवी तुसां पाईयो एहो पदवी तुसां पाईयो ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

हम श्री राम नाम दे व्यापारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।।

इस कीर्तन के माध्यम से सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे की चाल का बखूबी अति सहजता से वर्णन किया गया है। निःसन्देह यह चाल अपनाने योग्य है और इसके अन्तर्गत भाव-स्वभाव परिवर्तन का सन्देश है ताकि हम दुनियावी व्यवहारों में उलझकर अपना सुख-चैन न खो बैठें। इस कीर्तन में स्पष्ट किया गया है कि सर्वोत्तम व्यापार राम नाम का

व्यापार है। अतः अगर अमीरों के अमीर बनना चाहते हो तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बताई युक्ति अनुसार राम नाम का व्यापार करो। कहने का आशय यह है कि अपनी सुरत को संसार संग जोड़ने के स्थान पर समर्पित भाव अपनाकर अन्तर्मुखी हो जाओ और जो नाम-अक्षर मिला है उसका युक्तिसंगत जाप करते हुए आत्म-स्वरूप में रम जाओ यानि राम नाम के साथ जुड़ो और राममय हो जाओ। कुदरत ने तो हमें समय अनुकूल युक्ति दे रखी है परन्तु हम उस युक्ति को वर्ताव में न लाएँ तो इसमें किसका कसूर है? अपने लिए फ़कीरपना कौन खरीद रहा है?

'हम खुद'।

तो यह सब हमारा ही कसूर है क्योंकि हम अपनी सुरत को शास्त्र-विहित युक्ति अनुसार प्रवृत्त करने में सफल नहीं हो पाए, इसीलिए हम गरीब हैं। तभी हम इच्छामुक्त नहीं हो पा रहे यानि और, और पाने की इच्छा हमारे अन्दर उठती रहती है और हमें तड़फाती रहती है। इसी इच्छा पूर्ति के जाल में फँसकर हम कुकर्म अधर्म करते हैं। इसके विपरीत जो राम नाम के व्यापार के प्रति समर्पित रहता है वह अमीरों का अमीर हो इच्छामुक्त हो जाता है यानि परम सन्तोष प्राप्त कर लेता है। ऐसा इन्सान ही कामनामुक्त कहलाता है। उसी के अन्दर क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकार नहीं पनपते। विकार वृत्तियाँ नहीं होती तो इन्सान हृष्ट-पुष्ट रहता है और उच्च-बुद्धि, उच्च-ख़्याल अवस्था में सदा बना रहता है। ऐसा इन्सान कभी हार नहीं खाता और हर कदम पर जीतता रहता है। सजनों यदि आप भी ऐसा सक्षम व सर्व-समर्थ इन्सान बनना चाहते हो तो इस कुदरती ग्रन्थ में विदित आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति अपने आप को समर्पित कर दो और संसार की सब सोचों से मुक्त हो जाओ। याद रखो जहाँ मन में अफुरता है वहाँ आत्म-साक्षात्कार है और जहाँ आत्म-साक्षात्कार है वहाँ 'मैं ब्रह्म हूँ', अपना यह यथार्थ स्पष्ट है। फिर जिधर भी देखो सब ब्रह्म ही ब्रह्म नज़र आता है और लगता है कि मैं अब तक समझता रहा कि दूसरा कोई है अतः लड़ाई-झगड़ा, निन्दा-उस्तत करता रहा परन्तु वास्तव में सब एक ही है, तब अपनी मूर्खता पर दया आती है। ऐसा होने पर इन्सान कहता है कि अब मैं आत्म-निर्भर हूँ, अब मेरा विश्वास कोई नहीं तोड़ सकता। मैं सब कुछ करने में सक्षम हूँ अतः मुझे किसी की मदद नहीं चाहिए। इस तरह हमें जिस निमित्त-कारण हेतु जीवन मिला है, वह जगत हितकारी कार्य निर्विकारिता से करते हुए परमात्म नाम कहा सकते हैं। ऐसा होने पर दसवें द्वार का रास्ता खुल जाता है और हम प्रकाश नाल प्रकाश होने में सक्षम हो जाते हैं यानि परमधाम पहुँच विश्राम को पाते हैं। इस तरह रूप, रंग, रेखा समाप्त हो जाती है और जीवन लक्ष्य

सिद्ध हो जाता है। अब यह तो आप जानते ही हो कि रूप, रंग, रेखा रहित कौन है? - वह है परमेश्वर। इस तरह हम परमेश्वर नाल परमेश्वर हो जाते हैं यानि सब इच्छाओं व इन्द्रियों का सहज ही दमन हो जाता है। सजनों जब परिपूर्ण ज्ञान सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में हमारे पास है तो फिर उस कुदरत का धन्यवाद करते हुए सहर्ष अपने अन्दर बदलाव ले आओ और धन्य-धन्य हो जाओ। यही हमारे जीवन का मकसद है। तभी तो सच्चेपातशाह जी कहते हैंः-

साजन जी जिव्हा कर जावे उन्हां दी चुप, फिर ख्याल न राहवे सोचां विच

सजनों आप भी जिव्हा का मौन साधकर सब सोचों से आज़ाद हो जाओ यानि शान्त हो उन्मुक्त हो जाओ। यहाँ याद रखो जहाँ सन्तोष है वहाँ धीरता है और जहाँ धीरता है वहाँ सत्य-धर्म के रास्ते पर बने रहना कोई कठिन बात नहीं है। ऐसे में कौन हमारे सामने टिक सकता है? याद रखो यह मोह-माया ही है जो हमें अपने जाल में फँसा लेती है। इसके जाल में फँसने पर हम बुद्धिहीन हो जाते हैं। फिर पछताते हैं, रोते हैं और जीवन व्यर्थ गँवा बैठते हैं। ऐसा न हो इस हेतु सजनों राम-नाम का व्यापार करना आरम्भ कर दो। सबको इसी रास्ते पर चलाओ। बार-बार कह रहे हैं कि अपने, अपने परिवार व समाज के सजन बनो और सबको इस ग्रन्थ में विदित सन्देश बताने के काबिल बनो। अब आगे सुनोः-

श्री रघुनाथ जी अपने सुपुत्र श्री महाबीर जी को कह रहे हैं

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।

कोई विरला ओ बच जासी, जेहड़ा राम शरण जो आसी।।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

महाबीर जी अपना बल प्रगट करो, भारत माता जी दे सिर तों भार हरो।

माता जी दे कष्ट निवारण करो, नाम तुहाडा तेजधारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

राम नाम नूं हुन याद करो, जन्म अपने नूं आबाद करो।

सतवस्तु दा सजनों राज करो, ओ सबदा शहनशाली है।।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

अत्यन्त नाम वल ध्यान धरो, जन्म अपना हुन आज़ाद करो।

सतवस्तु दा सजनों साज करो, ओहदी ताकत अजब निराली है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

भारत माता जी दी आज्ञा दा पालन करो, संकट टारी माता दा संकट दूर करो।

माता मारे आवाज़ां, ऊंदी विपता हरो, नाम आपदा हनुमान जी बलधारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

भारत माता जी दे वचनां नूं पूरा करो, हो सपुत्र उस दी पीड़ा नूं दूर करो।

हटे अन्धेरा हुन चानणा ज़रूर करो, नाम आपदा न्यायकारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

सजनों इस कीर्तन के माध्यम से जो सन्देश मिला है उसके भावार्थों को जानकर आपको अपने अन्दर वांछित परिवर्तन ले आना चाहिए ताकि आपके अन्तर्घट का वातावरण हल्का-

फुल्का हो जाए। इस सन्दर्भ में यदि आपका ख़्याल फुरनों से बोझिल है तो अभी आपने सृष्टिकर्त्ता का हुक्म सुना ही है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी जो त्रिलोकी में सर्वश्रेष्ठ हैं, उस सुपुत्र को क्या आज्ञा मिली है - उन्हें कहा गया है कि हे हनुमान जी ! आप भारतमाता के सिर से बोझ हर लो यानि पापी जीवों को दग्ध-भस्म में डाल दो। कहने का मतलब यह है कि भारतमाता पर बोझ मत बनो। जानो जितना सोचते हो वह दिमाग़ पर बोझ समान है। इस बोझ तले बोझिल मत होवो अपितु परमार्थ का रास्ता स्वीकारो। यहाँ जानो कि परम अर्थ की सिद्धि हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में जो संविधान ईश्वर ने आपको बख़्शा है उसको समझना हर इन्सान का अपना-अपना कर्त्तव्य है अतः विदित नीति-नियमों को समझो और उनकी उल्लंघना मत करो। जानो यदि ऐसा किया और विपरीत भाव-स्वभाव अपनाकर या बातचीत का तरीका अपनाकर अपने ख़्याल को अस्वच्छ कर लिया तो मारे जाओगे क्योंकि यह नीति यानि कुदरती संविधान के विरुद्ध है। ऐसे विरुद्ध चलने वाले इन्सानों का पता है न कि प्रभु क्या करते हैं? तो क्या ईश्वर के विरुद्ध चलने की हिम्मत कर सकते हो? ऐसा मत करो अपितु ईश्वर की कृपा प्राप्ति के योग्य पात्र बनो। उसकी कृपा प्राप्त करने हेतु अन्तर्घट पावन होना चाहिए ताकि कृपा प्राप्त हो उसे धारण करने योग्य बन उसका लाभ उठा सको और भाव-स्वभाव से उसे प्रगटा सको। इस तरह औरों के अन्दर भी उस कुदरती संविधान को धारने के प्रति और उसके अनुकूल अपना जीवन ढालने के प्रति जागृति पैदा कर सको। सजनों यह महाबीर सत्संग सभा का नियम है और यही है सेवा महाबीर सत्संग के सदस्यों की। यहाँ विचारना यह है कि क्या हम इस सेवा में निपुण हैं? क्या इसके प्रति हमारे अन्दर दिलचस्पी है या हम वर्तमान युग के अधीन हो विक्षिप्त हो गये हैं और अपनी ताकत खो चुके हैं? आशय यह है कि कहीं हम अपने आप को मनमत के समर्पित कर बुद्धि की स्वतन्त्रता खो तो नहीं बैठे? आपकी हालत देखकर लग तो यही रहा है कि करना क्या था और कर क्या रहे हैं अर्थात जो जीवन हमें आत्म-स्वरूप से परिचित होने के लिए मिला था, हम उसे दग्ध-भस्म की भेंट कर चुके हैं यानि मौत खरीद चुके हैं। यह हमने अपने साथ क्या किया, न्याय या अन्याय? हमने ईश्वर प्रदत्त इस मानव चोले का आदर किया या निरादर? अगर कोई दूसरा हमारे इस मानव चोले का निरादर करे तो हमें गुस्सा आ जाता है परन्तु जब हम खुद अपना अपमान करते हैं तो हमारे अन्दर कोई रोष पैदा नहीं होता। यह तो अपने साथ बहुत बड़ा छल है। कोई दूसरा हमें छले तो समझ आती है पर यदि हम खुद को ही छलें तो यह बात समझ नहीं आती। जानो जो छली होता है वह कपटी होता है, तो क्या यह अच्छा लगता है? शास्त्र कहता है कि हे इन्सान -

कूड़ कपट छल हृदय भरया, ऐसा पाप कमावे

कूड़ कपट छल हृदय भरया, मैंनु लड़न दी जाच न आवे

यह क्या, बुरा होते हुए भी हम अपने आपको अच्छा साबित करना चाहते हैं। यह कितना बड़ा झूठ है। हम अपना झूठा प्रदर्शन क्यों करना चाहते हैं? याद रखो झूठ तो एक दिन पकड़ा ही जाता है और फिर सम्बन्ध विच्छेद हो जाते हैं। इसी तरह से आप सजनों की सुरत का भी आद् शब्द से सम्बन्ध विच्छेदन हुआ पड़ा है और इसी कारण आपको तीनों तापों का रोग भी लगा पड़ा है। याद रखो जब हम युक्तिसंगत ब्रह्मसत्ता का निरन्तर ग्रहण करते रहते हैं तो उस अनहद नाद से ब्रह्मसत्ता का भरपूर प्रवाह हमारे अन्दर सतत् प्रवाहित होता रहता है जो हमारे रोम-रोम, रग-रग को प्रकाशित रखता है। इसी ब्रह्मसत्ता से ही पृथ्वी, यह जो भारत माता है, इसका भी सिंचन होता है। यह शरीर माटी है और पृथ्वी भी माटी है। माटी एक दिन माटी में मिल जाती है। इसी माटी से शरीर की पालना हेतु जीवनदायक फल, फूल, सब्ज़ियाँ, आहार आदि चीज़ें प्राप्त होती हैं और जीवन का रक्षण होता है। तो यह भारत माता ही सबका पोषण करती है। फिर इसी में एक दिन हम सब मिल जाते हैं और पुनः नया रूप धारकर आते हैं। सो यह भारत माता जो आपको आहार देती है, आपकी पोषणा करती है आप उसी के आश्रय में रहते हुए पाप कमाते हो और उसके साथ नाइन्साफ़ी करते हो। क्या यह ठीक है? नहीं, यह तो बहुत बड़ा ग़ुनाह है। यदि वह आपके अस्तित्व को मिटाकर माटी में परिवर्तित कर दे और कहे कि जिस बोझ तले मैं दबी हुई हूँ, अब जरा वह बोझ सहन करके दिखाओ, तो क्या यह बोझ सह सकोगे?

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हमें कुदरत व उसके विस्तार को समझना है ताकि हमें ज्ञात हो कि हम अपने जीवन को स्वस्थ व सकारात्मक कैसे बना सकते हैं। इस तथ्य के दृष्टिगत ही कहा जाता है, 'समभाव नज़रों में कर सजन भाव प्रकृति में ले आओ' ताकि समस्त नकारात्मक भाव-स्वभावों से छुटकारा मिले। जानो श्रेष्ठता का प्रतीक बन आत्मपद प्राप्त करने की एकमात्र यही युक्ति है।

आप भी इस युक्ति को प्रवान कर आत्मपद को प्राप्त करने में सफल हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित जय सीता राम जी।